VOL- IX | ISSUE- IV | APRIL | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

जैनेंद्र कुमार की साहित्यिक मान्यताएँ : एक अध्ययन
(उपन्यास साहित्य के संदर्भ में)

मनोज बाला शोधार्थी,
आ.पी.जे.एस. विष्व विद्यालय, चुरू (राजस्थान)

सारांष –

हिन्दी साहित्य में जैनेंद्र कुमार एक विशिष्ट कलाकार हैं। इन्होंने अपने औपन्यासिक साहित्य में जीवन की आन्तरिक गहराई को अभिव्यक्ति दी हैं। हिन्दी उपन्यास साहित्य में जीवन दर्शन, मनो विज्ञान, अध्यात्म और भाव निष्ठा में एकत्र करने का श्रेय जैनेंद्र कुमार को जाता है। इसलिए गम्भीर कलाकार होने के साथ एक विचारक के रूप में भी देखा जा सकता है। उपन्यास विधा के क्षेत्र में जैनेंद्र कुमार का विपुल साहित्य है। जैनेंद्र कुमार के साहित्य को लेकर यह पर्याप्त चर्चित अवधारणा है कि जैनेंद्र कुमार की साहित्यिक मान्यताएँ निजी हैं। अपनी मान्यताओं के माध्यम से अनेक संदर्भों में उन्होंने अपने विचार प्रकट किए है। जैनेंद्र कुमार का मानना है कि मनुष्य का सारा विकास सत्य के साक्षात्कार का मानना है। मनुष्य की सतत् चेष्टा इस का चेतन और अवचेतन स्वरूप निर्धारित करती है। संस्कार को सत्य का पर्याय कहा जा सकता है। इसलिए साहित्य की कसौटी इसी संस्कार शीलता का नाम है। यह जैनेंद्र की साहित्यिक मान्यता उनके उपन्यासों के मध्य देखी जा सकती है। उपन्यासों की कथा विकास के जितने भी पात्र हैं, सबके कथाभाव इनके माध्यम से जैनेंद्र ने चित्रित किए हैं। यही चित्रण जैनेंद्र कुमार के उपन्यास साहित्य की मान्यताओं के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

कुंजी शब्द –

उपन्यास, साहित्य, मान्यता, संस्कार, संगृहित, राष्ट्र विकास, विश्व स्तरीय, मूल्यवान, निधि, सूक्ष्म, अनिर्वयनीय, खरा साहित्य, सुदृश्य, शुद्ध चिंतन, उन्मुख।

प्रस्तावना –

जैनेंद्र का उपन्यास साहित्य का सत्य यह है कि यह समाज की उस अवस्था के प्रभाव को व्यक्तित्व पर दिखाया गया है, जिसकों आम भाषा में समाज की परिस्थितियां कहा जाता है और उसके चित्रण को मनोविज्ञान साहित्य में जैनेंद्र की उपन्यास परम्परा को प्रेमचंद की औपन्यासिक कृति 'निर्मला' से जोड़ा जाता है। यहाँ यह भी कहना संगत होगा कि जैनेंद्र कुमार पर प्रेमचंद और मोहन दास कर्मचंद गाँधी का प्रभाव सबसे अधिक पड़ा, यह उनके साहित्य में देखा जा सकता है। साहित्यिक मान्यताओं के निजत्व में जैनेंद्र की सत्यं, शिवं और सुंदरम् की कल्पना इन्ही की देन है।

नाटक में सक्षम और समर्थ पात्रों का संयोजन है। गतिशीलता से युक्त पात्रानुकूल भाषा के साथ नाट्सौन्दर्य का गुण भाषा में विद्यमान है। ''नारी उत्थान' की रेखांकन योग्य विशेषता यह है कि कथानक नातिलघुनाति दीर्घ होते हुए भी अनुकूल दृश्यों में विभाजित है और पात्रों की संख्या कम करने के पश्चात रंगसूत्रों से सम्पन्न करवाकर उपयुक्त मंचीय क्षमता से परिपूर्ण बनाकर, टेलीकास्ट या फिर नुक्कड़ नाटक के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।

जैनेंद्र कुमार ने वर्ष १९२९ में 'परख' लिखाा जिसमें कहो, सत्यधन और बिहारी के माध्यम विधवा

विवाह के संगत संदर्भों को उजागर किया। इसी प्रकार वर्ष १९३४ में 'सुनीता' का संस्करण प्रकाशित हुआ जो महत्त्वपूर्ण मनोविज्ञान का चित्रण करने वाला उपन्यास बना। सुनीता, श्रीकांत, हरिप्रसन्न इसके प्रमुख पात्र हैं। यह एक प्रेम त्रिकोण की रूपाचित करने वाला उपन्यास है। कुछ लोग इस उपन्यास की जैनेंद्र पर जग्नता परोसने का आरोप लगाते हैं। 'त्यागपत्र' १९३७ में प्रकाशित हुआ इसमें मृणाल का चरित्र इतना प्रभावी है कि मृणाल साहित्य की अनमोल निधि बन गयी। प्रमोद जज है और मृणाल उसकी बुआ है, जो चाहकर भी मृणाल की सहायता नही कर सकता। 'कल्याणी' १९३९ में प्रकाशित होने वाली कृति है। आशारानी इसकी प्रमुख पात्र है और इसको आत्मकथा शैली में लिखा गया है। 'सुखदा' का प्रकाशन वर्ष १९५२ है। यह धर्मयुग में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुआ है। इसके प्रमुख पात्र सुखदा और लाल हैं। पति-पत्नी की वैचारिक भिन्नता से दोनों तनाव में हैं। 'विवर्त' १९५३ में प्रकाशित हुआ था और यह साप्ताहिक हिन्दुस्तान में धारावाहिक रूप में छपा था। जितेन, नरेशचंद्र और भुवन मोहिनी इसके प्रमुख पात्र। इसी वर्ष 'व्यतीत' भी प्रकाशित हुआ था, अनीता और जयंत इसके प्रमुख पात्र हैं। असफल प्रेम के चित्रण करने वाले इस उपन्यास में जयंत रूपी नायक की मनोदशा का चित्रण है। 'जयवर्द्धन' १९५६ में छपा था, यह राजनैतिक व्यवस्था का चित्रण डायरी के रूप में चित्रित करता है। यह उपन्यास विधा में जैनेंद्र का एक प्रयोग सा लगता है। 'मुक्ति बोध' वर्ष १९६५ वर्ष की हिन्दी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृति है। यह उपन्यास साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कृति है। सहाय राजलक्ष्मी और नीलिमा इसकी पात्र संयोजना का हिस्सा है। 'अनन्तर' वर्ष १९६८ में प्रकाशित हुआ था। अपराजिता या अपरा प्रसाद और रामेश्वरी इसके प्रमुख पात्र है। 'अनामस्वामी' वर्ष १९७४ की कृति है, वसुंधरा, शंकर और इसके प्रमुख पात्र है। 'दर्शाक' अंतिम औन्यासिक कृति है। इसकी केंद्रीय पात्र सरस्वती है। इसमें नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं के चित्रण की अभिव्यक्ति के साथ उसके मनोविज्ञान के पहलू भी चित्रित किए है।

जैनेंद्र कुमार साहित्यिक मान्यताओं के संदर्भ में स्वयं कहते हैं, ''साहित्य की कसौटी वह संस्कारशीलता है, जो हृदय से हृदय तक मेल चहती है और एकता में निष्ठा रखती है। सहृदय का चित मुद्रित करता है, वह साहित्य खरा और संकुचित करता है वह खोटा होता है।''१ जैनेंद्र कुमार की यह परिभाषा व्यापक और प्रतिष्ठित साहित्यिक मान्यताओं की ओर संकेत करती है। इसके साथ ही जैनेंद्र कुमार एक स्थान पर और इसी प्रकार से लिखते है, ''मनुष्य की मनुष्य के साथ, समाज के साथ, राष्ट्र और विश्व के साथ, इस तरह से स्वयं के साथ सुन्दर समंजसता, समरसता, समस्वरत स्थापित करने की चेष्टा चिरकाल से चली आ रही है, वही मनुष्य जाति की संग्रहित मूलविधि है। अर्थात् मनुष्य के लिए जो की कुछ उपयोगी है वही ज्ञात और अज्ञात के रूप में उसकी सत्य की चेष्टा का प्रतिफल है। अतः इस प्रकार मानव जाति की इस अनंत निधि में जितना कुछ अनुभूमि भंडार लिपिबद्ध वही साहित्य है।''२ वस्तुतः यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जैनेंद्र कुमार की साहित्य की मान्यता बेहद साफ और स्पष्ट है। उपन्यास में उनके पात्र इन्ही सत्य की अभिव्यक्ति हेतु अपने मन में उछल-पुथल और समस्याओं से ग्रसित मिलते हैं। उनका अन्तद्वंद्व उभर कर सामने आया है। उन्होंने मन की चेतन अवचेतन और अचेतन अवस्थाओं का चित्रण यही बताता है कि आत्म पीड़ा की अभिव्यक्ति ही जीवन की अनुभूमि का प्राण है। उपन्यासों में यही दर्शाया गया है। कढ़ढो एक जैनेंद्र कुमार का परिचित पात्र है। उसकी स्वयं की इच्छा का चित्रण करते जैनेंद्र लिखते हैं, ''लोग कहते हैं कि वह विधवा है, कम नसीब, लड़की जान गयी है, वह विधवा है, कमनसीब भी होगी। लेकिन फिर क्या हँसने खेलने, भागने कूदने का अधिकार क्यों नही रखती, यह सब कुछ समझ में नही आता है।''३

सुनीता भी यही सोचती है, ''स्त्री किसलिए है, यदि पुरूष का प्रयोजन दान-फल दान में नियोजित नही करती तो? क्या स्त्री इसलिए है कि वह पुरूष को अपने से निरपेक्ष रहने दे और महाप्रकृति को बंध्या। क्यों दुनिया को रेगिस्तान नही होना है?''४ इस प्रकार 'परख' और सुनीता दोनों के उदाहरण इस बात की संकेत करते है कि जीवन में जो भी सत्य है उसको स्वीकार लेने से मनुष्य के आधे दुख कम हो जाते हैं और इस आधे दुख को झेलने की शक्ति आ जाती है। कट्टो एक बाल विधवा है वह इस बात को स्वीकार कर लेती है और इसको जीना भी शुरू कर देती है। इसी प्रकार वह शृंगार भी करती है क्योंकि उसको चाव है, परन्तु घर के भीतर ही रहकर। सुनीता भी स्त्री को पुरूष की चिटसहचरी मानकार अपना जीवन जीती है और धरती और समाज की चिंता करके अपने को संवेदनशील बताने की चेष्टा करती है। उसकी यह संवेदनशीलता ही है कि 'हरिप्रसन्न के सामने निर्वसना भी हो जाती है क्योंकि प्रेमी और पति के सामने एक औरत को निर्वसना होना भी एक सत्य है। इस प्रकार इस उपन्यास को लेकर जैनेंद्र कुमार को नग्नता और वासना परोसने का आरोप भी लगाते हैं जो गलत है। सत्यं, शिवं और सुंदरम की कल्पना में अहंकार को कोई स्थान नही है। ऐसा चरित्र त्यागपत्र की मृणाल का है, वह कहती है, 'दान स्त्री का धर्म है, नही तो और उसका क्या धर्म है, उसमें मन माँगा जाएगा, तन भी मांगा जाएगा? सती का आदर्श और क्या है?''५ यह बात समर्पण के उस चरमं को दर्शाती जिसमें सत्य के पश्चात शिवम का आविर्भाव होता है। एक स्त्री इस धरती पर देने के लिए अवतरित होती है, इसलिए वह दाता है अैर इस दाता के लिए अहंकार का निषिद्ध है। सत्य के साथ शिवम भी सर्वव्यापी और सूक्ष्म है। अन्य रह गया सुदरम्। सुन्दरम् की अभिव्यक्ति का एक संवाद प्रस्तुत है, ''ब्याहता को पवित्रता से परिपूर्ण होना चाहिए उसके लिए पहले उसके पति के सच्ची होना बनता है। ऐसा होकर ही वह सच्ची समर्पित नारी बन सकती है।''६ वस्तुत सुंदरम की यह बात जैनेंद्र की निजी मान्यताओं का अंश है।

उपसंहार -

उपरोक्त विवेचन के पश्चात यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जैनेंद्र कुमार का औपन्यासिक साहित्य जैनेंद्र कुमार की निजी मान्यताओं की अभिव्यक्ति करने वाला है। जीवन के नाना प्रकार के चित्र खींचते हुए जैनेंद्र कुमार ने उन चित्रों को अपने मान्य आधारों के अनुसार चित्रित किया है। सत्य की संकल्पना, शिवम् की संकल्पना और सुंदरम् की संकल्पना का चित्रण जैनेंद्र कुमार अपने तरीके से करते हैं। इसलिए उपन्यास को जीवन से जोड़कर देखा जाना गलत नही है। जैनेंद्र कुमार की ये मान्यताओं साहित्य में अन्यत्र भी खोजी जा सकती है परन्तु जैनेंद्र कुमार की ये मान्यताएं विशिष्ट होने के साथ-साथ निजी और नैतिक दोनों हैं। जैनेंद्र सत्य, शिवं और सुंदरम् की अभिव्यक्ति हेतु अपने कथात्मक संदर्भ गढ लेते हैं और अपनी कााि के माध्यम से अपनी बात कहकर सफलता की सीढ़ियां चढ़ जाते हैं। जैनेंद्र की इन मान्यताओं के एप्रोच की बात की जाए तो वे गाँधीवादी और प्रेमचंदवादी दोनों ही परन्तु उपन्यास सृजन में मानववादी है।

संदर्भ सूची -

१. साहित्य का श्रेय और प्रेम, जैनेंद्र कुमार, पृष्ठ २०१
२. वही, पृष्ठ १३३
३. परख, जैनेंद्र कुमार, पृष्ठ ७३
४. सुनीता, जैनेंद्र कुमार, पृष्ठ ६१
५. त्याग पत्र, जैनेंद्र कुमार, पृष्ठ ७९
६. सुनीता, जैनेंद्र कुमार, पृष्ठ ८२